10

vk;qosZn

प्रिय शिक्षार्थी, पूर्व पाठ में आपने कारक विभक्तियों को अभ्यास वाक्यों के माध्यम से जाना। इस पाठ में आप हमारी महान विरासत के मोती रूपी ज्ञान आयुर्वेद के विषय में जानेगें। प्राचीनकाल में आयुर्वेद विश्वविद्यालयों में एक मुख्य विषय के रूप में पढ़ाया जाता था। वर्तमान में भी आयुर्वेद दुनिया भर में प्रसिद्ध हो रहा है। आयुर्वेद को अथर्ववेद के उपवेद के रूप में भी जाना जाता है।

mÌ';

यह पाठ पढने के बाद आप सक्षम होंगे:

- आयुर्वेद की प्राचीन परम्परा जान पाने में; और
- अपनी दैनिक जीवन में आयुर्वेद के महत्त्व को समझ पाने में।

vk;qosZn

10.1 vk;qosZn% nhud thou

vk;qosZnL; bfrgkl% ofnddkyknso vkjH;rA vr% i'pkRlglzo"kkZH;k·fi çkphuk·;a bfrgkl%A fo'k"kr% fØLrioZprFkk'krdknkjH; fØLr'krdL; ff 'krdi;ZUre vk;qosZnL; mRd"kZ:ViijEijk% u doya çpkj vklu vfir rRdkyhu"k ç[;kr"k ukyUnk] foØe'khyk] oyHkh bR;kfn"kq fo'ofo|ky;"kq çe[kfo"k;Rou ikBîUr LeA Hkkjrh;% lg fon'kh;Nk=k vfi vL; ç;ktu çkIroUr vklUA

LokLF;j{k.k vk;qosZnL; çk/kkU;efHky{; vk;qosZn% vFkoZosnL; mioosnRou LFkku Hktr A erfen pjd lqJrokXHkVkfnfHk%

çe[kk;qosZnkpk;Z;Zo çdkf'kreA 0;k[;kudkj% pØikf.kjfi ,o onfr&

vk;qosZnL; vk;qosZnRoeä Hkofr] vFkoZosnd'k"’k ,o vk;qosZn% bfrA

vk;qosZn & 'kCnL; 0;qRifÙk lk/k;fnHkjkpk;Z% çdVh—re &

vk;qjfLeu fo|r] vuu ok vk;qfoUnfr bfrA *Hkkoçdk'k* & Vhdkdkjkfi *vk;qosZn* 'kCne ,o fo'knhdjkfr &

vuu i|#"kk ;Lekn vk;|foUnfr ofÙk pA

rLekUefuojj|'k *vk;|oZn* bfr Le'r%A bfrA

—RLuk·fi vk;|oZn% v"V/kk foHkä%A 'kY; & 'kkykD; & dk;fpfdRlk & xg & dkekjHkR; & vxnrU= & jlk;urU= & okthdj.kkuhfrA

pjdkpk;|fojfprk *pjdlfgrk*] lJ|rkpk;|ç.khrk l|"r|lfgrk] okXHkVxfFkre v"Vk³xân;] ek/kodjL; ek/kofunku] 'kk³x/kjL; 'kk³x/kjl)fr% bR;kn;% vk;|onL; çe[kxUFkk%A pjdlfgrk;k …†ƒ lL;tU;æ0;k.kk] ƒ‰‰ çkf.ktU;æ0;k.kk] ˆ† [kfutæ0;k.kk p mYy[k% —rk·fLrA xUFkL;kL; egÙoefHky{; vL;udkfu 0;k[;kukfu jfprkfuA pjdlfgrk;k 8 LFkkukfu lfUrA eyr% ,"kk vfXuo'ku jfprk lfgrkA r= pjdegf"k.kk çfrlLdkj% —r%A rr% –<cyuEuk vij.k o|u lij.k —reA ,oe v| miyC/kk;k pjdlfgrk;ke ,"kk =;k.kk dr0;| fo|rA

vk;|oZnu lkj.k vk;|% prfo/ke &

- fgrk;|%]
- vfgrk;|%]
- l|[kk;|%]
- n%[kk;|'pfrA

fgrkfgr l|[k n%[k vk;LrL; fgrkfgre A

eku p rPp ;=kä vk;|oZn% l mP;r AA

vk;qosZn

ekufld 'kkjhjdjkxjfgrL; Kkfuu% l|–<or% ekuoL; vk;% l|[kk;%A ,rf}ijhr% n%[kk;%A vfj"kMoxfoftrL; loHkrfgr% jrL; vk;% fgrk;%A rf}jk/k vfgrk;% HkofrA vk;|'p 'kjhjfUæ; lÙokReI;kx%A bRFk% fg 'kjhj% r| ukukfo/k&vkf/k&0;kf/kuke vkxkjeoA vr% 0;k/;|il"Vkuk 0;kf/kifjek{k%] LoLFkL; LokLF;j{k.k p vk;qonL; }% ç;ktuA

HkkokFk%

आयुर्वेद का इतिहास वैदिककाल से ही प्रारंभ हो जाता है। इसका सहस्र वर्षों का प्राचीन इतिहास है। विशेषतः ई0 पू0 चतुर्थ शताब्दी से लेकर 11वीं शताब्दी ईसवी तक आयुर्वेद की सम्पन्न परम्परा रही है। न केवल आयुर्वेद प्रचार प्रसार में थी बल्कि नालन्दा, विक्रमशीला, वल्लभी जैसे उत्कृष्ट कोटि के विश्वविद्यालयों में आयुर्वेद प्रमुख विषय के रूप में पढ़ाया जाता था। भारतीय छात्रों के साथ विदेशी छात्र भी इससे लाभान्वित होते थे।

स्वास्थ्य की रक्षा आयुर्वेद का प्रधान उद्देश्य है। और आयुर्वेद अथर्ववेद के उपवेद के रूप में जाना जाता है। चरक, सुश्रुत, वाग्भट्ट आदि प्रमुख आचार्यों ने इसे आगे बढ़ाया। व्याख्याकार चक्रपाणि का भी कहना है कि–

आयुर्वेदत्वं ही आयुर्वेद है, यह अथर्ववेद का ही भाग है। आयुर्वेद शब्द की व्युत्पत्ति को साधयादि आचार्यों ने प्रकट किया है – आयुर्वेद में जीवन का ज्ञान है। भावप्रकाश टीकाकार ने आयुर्वेद शब्द को विशद रूप देते हुए कहाँ है कि– "आयुर्वेद से जीवन का ज्ञान प्राप्त करता है इसलिए ऋषियों ने इसे आयुर्वेद कहा है।

सम्पूर्ण आयुर्वेद शास्त्र आठ भागों में विभक्त किया गया है – "शल्य–शालाक्य–कायचिकित्सा–ग्रह–कौमारभृत्य–अगदतन्त्र–रसायनतंत्र –वाजीकरण"

चरक आचार्य विरचित "चरकसंहिता", सुश्रुत आचार्य विरचित सुश्रुतसंहिता, वाग्भट आचार्य विरचित अष्टाङ्हृदय, माधव आचार्य विरचित माधवनिदान शार्ङ्गधर आचार्य विरचित शार्ङ्गधरपद्धति इत्यादि आयुर्वेद के प्रमुख ग्रन्थ हैं। चरक संहिता में 341 सस्यजन्य द्रव्य, 166 प्राणिजन्य द्रव्य और 64 खनिजपदार्थों का उल्लेख किया गया है।

इस ग्रन्थ के महत्त्व को देखते हुए इस पर अनेक व्याख्याएं लिखी गई हैं। चरक संहिता मे आठ भाग हैं। मूलतः अग्निवेश द्वारा संहिता निर्माण किया गया। उस पर चरक महर्षि द्वारा कार्य किया गया। इसके पश्चात दृढबल नामक अन्य आचार्य द्वारा पूर्ण किया गया। इस तरह आज जो उपलब्ध चरकसंहिता है उस पर इन तीनों आचार्यों द्वारा कार्य किया गया है।

आयुर्वेद के अनुसार आयु चार प्रकार की होती है –

- हितायुः,
- अहितायुः,
- सुखायु और
- दुःखायु।

मानसिक शारीरिक रोग रहित ज्ञानी तथा सुदृढ़ मनुष्य की आयु सुखायुः होती है। इसके विपरीत आयु दुःखायु होती है।

छः प्रकार के दुश्मनों पर विजय प्राप्त तथा सबके कल्याण में रत मनुष्य की आयु हितायु है तथा इसके विपरीत आयु अहितायु होती है। शरीर–इन्द्रिय और सत्वात्म–संयोग आयु है। इसके विपरीत तो शरीर अनेक प्रकार की आधि–व्याधियों का घर ही है। इसलिए शरीर को बीमारियों से दूर रखना तथा स्वास्थ्य को अधिक स्वास्थ्यप्रद बनाना–ये दो ही आयुर्वेद के उद्देश्य हैं।

fØ;kdyki

नीचे दी गई तालिका में अपने दादा–दादी, नाना–नानी, माता–पिता या परिवार के किसी बडे सदस्य से बात कर के ऐसे किन्हीं दस पौधों के नाम लिखिए जिनका उल्लेख आयुर्वेद में माना जाता है।

क्र. सं.	आयुर्वेद में उल्लेखित पौधे का नाम तथा उसके कार्य
1.	
2.	
3.	
4.	
5.	
6.	
7.	
8.	
9.	
10.	

ikBxr iz'u& 10-1

1. निम्नलिखित का संस्कृत में उत्तर लिखिए–
   - (i) आयुर्वेदः प्राचीनकाले कुत्र कुत्र प्रमुख विषयत्वेन पाठ्यन्ते स्म?
   - (ii) आयुर्वेदः कस्य वेदस्य उपवेदः इति मन्यते?
   - (iii) व्यख्याकारः चक्रपाणेरनुसारं आयुर्वेदशब्दस्य व्युत्पत्ति–लक्षणं किम्?
   - (iv) आयुर्वेदः कतिधा विभक्तः?
   - (v) आयुर्वेदस्य के के प्रमुखाः ग्रन्थाः सन्ति?

vkius D;k lh[kk

- आयुर्वेद का अर्थ।
- आयुर्वेद का ऐतिहासिक वर्णन।
- आयुर्वेद का भाग–वियजा और आयुर्वेद के मुख्य ग्रन्थ।

ikBkar iz'u

1. आयुर्वेदस्य अष्ट–विभागाः के के सन्ति?
2. आयुर्वेदानुसारं आयुः कतिविधम् उक्तम्?

mÙkjekyk

10.1

(i) नालन्दा–तक्षशिला–वल्लभी इत्यादिषु विश्वविद्यालयेषु।

(ii) अथर्ववेदस्य

(iii) 'आयुरस्मिन् विद्यते, अनेन वा आयुर्विन्दति' इति।

(iv) अष्टधा

(v) चरकाचार्यविरचिता 'चरकसंहिता', सुश्रुताचार्यप्रणीता सुश्रुतसंहिता, वाग्भटग्रथितम् अष्टाङ्गहृदयम्, माधवकरस्य माधवनिदानम्, शार्ङ्गधरस्य शार्ङ्गधरपद्धतिः इत्यादयः आयुर्वेदस्य प्रमुखग्रन्थाः।